दलितों व शोषितों का पाक्षिक पत्र
विज्ञापन के लिए केन्द्रीय सरकार व राज्यों द्वारा स्वीकृत

हमायती

सम्पादक–डॉ0 सोहनपाल सुमनाक्षर

❑ *वर्ष 59* ❑ *अंक-11* ❑ *दिल्ली* ❑ *अप्रैल 2021 (प्रथम)* ❑ *मूल्य : 2 रु.*

36वां राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन

बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर ने गुलामी से मुक्ति के मार्ग के साथ ही अपने अधिकारों को पाने के लिए संघर्ष करना सिखाया–डा. सत्यनारायण जटिया

भारतीय दलित साहित्य अकादमी का द्विदिवसीय 36वां राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन 13–14 मार्च, 2021 को पंचशील आश्रम, झड़ौदा (बुराड़ी बाई पास), आउटर रिंग रोड, दिल्ली में आयोजित किया गया। अंतर्राष्ट्रीय स्तर के इस महासम्मेलन में देश के अलावा विदेशों के दलितोत्थान में जुड़े दलित साहित्यकार, पत्रकार, लेखक, समाजसेवियों ने भाग लिया और दलितोत्थान विषयों पर विचार विमर्श किया।

पहले दिन का सम्मेलन **'सम्मान दिवस'** व दूसरे दिन का सम्मेलन **'अधिकार दिवस'** के रूप में आयोजित किया गया। इस अवसर पर दलितोत्थान के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यों के लिए दलित साहित्यकारों और समाजसेवियों को डा. अम्बेडकर राष्ट्रीय पुरस्कार तथा डा. अम्बेडकर राष्ट्रीय फेलोशिप से सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर विभिन्न प्रदेशों के दलित कलाकार अपना सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

इस दलित साहित्यकार सम्मेलन में विभिन्न दलों के राजनेताओं भाग लेकर दलितों की दशा व दिशा पर अपने विचार व्यक्त किया।

सम्मेलन का उद्घाटन भारतीय दलित साहित्य अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. सोहनपाल सुमनाक्षर तथा पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री संघप्रिय गौतम द्वारा भगवान बुद्ध तथा बाबा साहब डा. अम्बेडकर के चित्रों पर माल्यार्पण कर और दीप प्रज्ज्वलित कर किया। समारोह की अध्यक्षता पूर्व केंद्रीय मंत्री श्री संघप्रिय गौतम ने की। पूर्व सांसद (राज्य सभा) डा. सत्यनारायण जटिया, अध्यक्ष–स्थायी समिति, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार समारोह में मुख्य अतिथि थे। महाराष्ट्र सरकार के पूर्व समाज कल्याण मंत्री नाना बबनराव घोलप, डा. एम.एल. रंगा, पूर्व स्वास्थ्य मंत्री, हरियाणा, श्री उत्तम कुमार परियार, माननीय सदस्य–रायल कौंसिल, नेपाल, श्री अमरीश सिंह गौतम, पूर्व डिप्टी स्पीकर, दिल्ली सरकार, डा. राजकुमार, उपकुलपति, यूपी, यूएमएस, सैफई, इटावा (यू.पी.) डॉ. जितेन्द्र 'मनु', संगठन मंत्री, साउथ इंडिया स्टेट्स कमेटी, बी.डी.एस.ए., श्री नीरज सेठी, राष्ट्रीय अध्यक्ष–सर्वशक्ति सेना, प्रो. पी. विष्णुमूर्ति, अध्यक्ष–साउथ इंडिया स्टेट कमेटी, बी.डी.एस.ए., श्री ब्रिजलाल रविदास, अध्यक्ष–नॉर्थ इंडिया स्टेट्स कमेटी, बी.डी.एस.ए. डॉ. जे.आर. सोनी, चेयरमैन–गुरू घासीदास शोधपीठ, छत्तीसगढ़ सरकार, प्रो. रतनलाल सोनाग्र, प्रसिद्ध दलित साहित्यकार आदि ने इस महासम्मेलन में विशिष्ठ अतिथि के रूप में सहभागिता कर सम्मेलन की शोभा बढ़ाई।

इस राष्ट्रीय सम्मेलन का प्रारम्भ बुद्ध वन्दना तथा भीम वन्दना गायन से हुआ।

भारतीय दलित साहित्य अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. सोहनपाल सुमनाक्षर ने अपने स्वागत भाषण में देश–विदेश से आये हजारों प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए कहा कि गत 36 वर्षों में भारतीय दलित साहित्य अकादमी ने दलित साहित्य, दलित कला व संस्कृति की स्थापना व अभिवृद्धि तथा दलितोत्थान के लिए जनचेतना अभियान के रूप में जो कार्य किये हैं, उसका साक्षात् परिदृश्य आज पंचशील आश्रम के इस खचाखच भरे दलित प्रतिनिधियों की उपस्थिति के रूप में देखने को मिल रहा है। अकादमी ने दलित साहित्य की अवधारणा, सीमा और उसके लेखन की दशा व दिशा का जो प्रतिपादन किया उसके कारण आज देश की सभी भाषाओं में दलित साहित्यकार पैदा हुए जिन्होंने अपने दलित लेखन से दलित साहित्य की रचना कर दलित साहित्य का अंबार लगा दिया है। आज दलित साहित्य सभी विश्वविद्यालयों, कालेजों व स्कूलों के पाठ्यक्रमों में पढ़ाया जा रहा है, दलित साहित्य पर विचार गोष्ठी, सेमिनार, प्रतियोगितायें कराई जा रही है। भारत सरकार की यू.जी.सी. ऐसे सेमिनार व संगोष्ठी पर विशेष अनुदान देकर, दलित साहित्य को प्रोत्साहित कर रही है। इससे अन्य भाषाओं के विद्वान

(शेष पृष्ठ 2 पर)

सम्पादकीय

36वां राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन : अकादमी की सक्रियता, लगन और निष्ठा का प्रतिफल

भारतीय दलित साहित्य अकादमी के इस 36वें राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन में देश–विदेश से पधारे–प्रतिनिधियों का देश की राजधानी दिल्ली में स्वागत अभिनन्दन करते हुए अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. सोहनपाल सुमनाक्षर ने प्रतिनिधियों को सम्बोधित करते हुए कहा–

प्रिय प्रतिनिधि गण साथियो!

भारतीय दलित साहित्य अकादमी का यह 36वां राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन 24-25 दिसम्बर, 2020 को यहीं आयोजित होना था, पर कारोना महामारी के कारण दिल्ली में 'लॉक डाऊन' लगने और सभा, समारोह, सम्मेलन पर रोक लगने के कारण तब सम्मेलन को स्थगित करना पड़ा। पर अब कोरोना महामारी के भय से कुछ मुक्ति मिलने पर और ठिठुरती सर्दी की बिदाई हो जाने पर 13-14 मार्च, 2021 को सुहावने वातावरण में यह सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। पर आप जानते ही हैं कि अधिकांश लोगों के अन्दर से कोरोना महामारी का डर अभी गया नहीं है, दूसरे कोरोना महामारी की बन्दिशों से देश का हर व्यक्ति आर्थिक, शारीरिक और मानसिक रूप से जरूर प्रभावित हुआ है, जिसका असर हम इस सम्मेलन पर भी देख रहे हैं, पर जो साथी इन सब मुसीबतों का सामना करते हुए भी अपने महापुरुषों के अधूरे कार्यों को साकार करने के लिए यहां पर पधारे हैं, मैं उनका हृदय से स्वागत अभिनन्दन हूं।

आप जानते ही हैं कि इस कारोना महामारी काल में हमारे कितने दलित महापुरुष अचानक काल के शिकार हो गये और कितने दलित साहित्यकारों को इस बीमारी की भयंकरता से जूझना पड़ा, यह हमारे सामने है। हमसे अचानक बिछड़े इन दिवंगत साथियों को हम भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं और प्रण करते हैं कि उनके अधूरे कार्यों को पूरा करने में हम कभी भी पीछे नहीं रहेंगे।

आप सदैव भारतीय दलित साहित्य अकादमी के कारवां को आगे बढ़ाने में अग्रसर रहे हैं। आज भी उसी अकादमी के कारवां को आगे बढ़ाने और अपने महापुरुषों के अधूरे स्वप्न को साकार करने के लिए जो आप अदम्य साहस के साथ इस सम्मेलन में पधारे हैं, उसके लिए हम आपके आभारी हैं। आपकी इस कर्मठता का स्वागत है।

भारतीय दलित साहित्य अकादमी पिछले 36 सालों में देश और विदेश में दलित साहित्य के माध्यम से भगवान बुद्ध, गुरु रविदास, महात्मा जोतीबा फुले, स्वामी अछूतानन्द 'हरिहर, बाबा साहब डा. अम्बेडकर, बाबू जगजीवन के सामाजिक समता के सन्देश को फैलाने में सफल हुई है और वह अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए निरन्तर आगे बढ़ रही है।

भगवान बुद्ध ने **'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय'** एवं **'अत्तो दीपो भवं'** का सन्देश दिया था। वहीं संतशिरोमणि गुरु रविदास ने समता का सन्देश देते हुए कहा था–''**ऐसा चाहूं राज मैं जहां मिले सबन को अन्न। छोटे बड़े सब सम बसैं रविदास रहे प्रसन्न।**'' महात्मा जोतिबा फुले ने सामाजिक विषमता, का मुख्य कारण अविद्या को बताते हुए कहा–**'विद्या बिना गति गई। गति बिना नीति गई। नीति बिन मति गई, बिना मति के वित्त गया। बिन विद्या के सर्वनाश हुआ। हम दूसरों के गुलाम बने।'**

बाबा साहब डा. अम्बेडकर ने सामाजिक विषमता और वर्ण व्यवस्था से छुटकारा पाने के लिए दलितों का आह्वान किया था–''**शिक्षित बनो, संगठित हो, संघर्ष करो।**'' उन्होंने दलितों को उनके समता के अधिकारों से अवगत कराते हुए उन अधिकारों को पाने के लिए संघर्ष का मार्ग प्रशस्त किया था। बाबू जगजीवन राम जी ने भी अपने राजनीतिक सामाजिक जीवन में समता का सन्देश देते हुए आजीवन इसके लिए कार्य किया।

भगवान बुद्ध के 'बहुजन हिताय व बहुजन सुखाय' तथा 'अत्तो दीपो भव' के उद्बोधन को अपना आदर्श व आप्त वाक्य मानकर भारतीय दलित साहित्य अकादमी 1984 से देश में जन चेतना का कार्यक्रम लेकर आगे बढ़ रही है। गत 36 वर्षों में अकादमी का 'नेटवर्क' भारत के सभी राज्यों की सीमा लांघकर विदेशों तक फैल चुका है।

दक्षिण भारत के 7 राज्यों और पूर्वोत्तर भारत के 8 राज्यों में अकादमी की शाखाओं ने दलितों को एकजुट करके एक सशक्त कड़ी बनाई है जिससे दलित अपने अधिकारों के प्रति सजग तो हुए ही हैं और उन्हें प्राप्त करने के लिए भी संघर्षरत हैं।

भारतीय दलित साहित्य अकादमी ने गत 36 वर्षों में दलित साहित्य के माध्यम से देश में एक नई वैचारिक क्रान्ति पैदा की है। दलित एक दूसरे को जानने लगे हैं और अकादमी के मंच पर आकर एक–दूसरे की समस्या को पहचानने भी लगे हैं और उन समस्याओं के निवारण के लिए विचार–विमर्श करके उनका हल ढूंढने लगे हैं। अकादमी ने 'दलित साहित्य' को जन्म दिया, कॉलेज–विश्वविद्यालयों में स्थापित किया, दलित लेखकों को प्रोत्साहित किया और दलित साहित्यकार के रूप में उन्हें सम्मानित करके समाज में यथोचित सम्मान देकर मार्गदर्शन किया।

आज विश्वविद्यालय व कॉलेज के पुस्तकालय दलित साहित्य से भरे पड़े हैं, दलित साहित्य पाठ्यक्रम शिक्षण संस्थाओं में पढ़ाया जा रहा है, उस पर शोध करवाकर पीएच.डी., डी.लिट्, एम.फिल की उपाधियों से शोधार्थियों को सम्मानित किया जा रहा है। प्रकाशक दलित साहित्य प्रकाशन के लिए दलित लेखक व साहित्यकारों को यथोचित मानदेय देकर दलित साहित्य लिखवा रहे हैं, देश में आज दलित साहित्य की तीव्र मांग है। यह सब भारतीय दलित साहित्य अकादमी के 36 सालों का प्रयास का फल है।

आज बुद्ध के सामने मनु को नकार दिया गया है। संत गुरु रविदास व सद्गुरु कबीर के सामने ब्राह्मणवाद नतमस्तक है। महात्मा जोतिबा फुले, स्वामी अछूतानन्द 'हरिहर' के सामने मनुस्मृति की विषमता भरी वर्ण व्यवस्था चूर–चूर हुई नजर आ रही है। भारतरत्न बाबा साहब डा. अम्बेडकर तथा बाबू जगजीवन राम के समता का सन्देश ने सदियों से सोये हुए दलितों को झकझोर कर जगाकर खड़ा कर दिया है। वीरांगना झलकारीबाई और वीरांगना सावित्रीबाई फुले के पराक्रम, साहस व वीरता के सामने उच्च वर्णीय गोरी महिलायें पानी भरती नजर आती हैं। यह सब अकादमी की खोज का परिणाम है। इसके पीछे भारतीय दलित साहित्य अकादमी का गत 36 सालों का परिश्रम, लगन, निष्ठा है जो अकादमी ने सदियों से मूक, अछूत, दलित, शोषित लोगों को मंच दिया, जुबान दी, विचार दिए, दिशा दी, कलम दी, लेखन के लिए प्रेरित किया, मान–सम्मान दिया और देश–विदेश में प्रख्यात किया। यह अकादमी का साकार परिणाम

(शेष पृष्ठ 4 पर)

पृष्ठ 1 का शेष...बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर ने गुलामी से मुक्ति के मार्ग के साथ ही अपने अधिकारों को पाने के लिए संघर्ष करना सिखाया–डा. सत्यनारायण जटिया

दलित साहित्य की संरचना की ओर आकर्षित हुए हैं।

डा. सुमनाक्षर ने कहा कि अकादमी ने दलित इतिहास, दलित कला, दलित संस्कृति की विरासत, दलित वीर नायक–नायिकाओं, महापुरुषों, समाज–सुधारकों, मूल निवासियों की धरोहर मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, लोथल आदि सभ्यताओं की खोज कर ब्राह्मणवादी अवधारणा उनके ब्राह्मणवादी साहित्य और शास्त्रों की झूठी परिकल्पनाओं, अनगिनत देवी–देवताओं, पूर्व जन्म के कर्म, स्वर्ग–नरक, वर्ण व्यवस्था, जातिवाद, ऊंच–नीच के भेदभाव का पर्दाफाश करके मानवीय मूल्यों की स्थापना की है, जहां देश की सत्ता, सम्पदा, जमीन– जायदाद पर सभी नागरिकों का बराबर का अधिकार है। अकादमी ने भारतीय संविधान द्वारा प्रदत्त समता, स्वतंत्रता, बन्धुता, न्याय को बढ़ावा देकर अलोकतांत्रिक सामाजिक विषमताओं का सदैव विरोध किया है।

भारतीय दलित साहित्य अकादमी के समक्ष सभी धर्म बराबर हैं और उनके सभी अनुयायी को भारतीय संविधान द्वारा प्रदत्त मौलिक अधिकार दिये जाने की पक्षधर है। अतीत का इतिहास गवाह है कि हिन्दू धर्म की वर्ण व्यवस्था–ब्राह्मणवाद के उत्पीड़न से त्रस्त होकर समता, बन्धुता व प्यार की आस में अछूत–दलित लोग जिस धर्म में भी गये वहां भी उन्होंने उस अकादमी उन्हें गले लगाती है और उनके समता के अधिकार के लिए अकादमी सदैव प्रयासरत रहेगी। आज मैं अकादमी की ओर से उन सबका पुनः अभिनन्दन करता हूं और आशा करता हूं कि इन्सानियत के इस दोहरे मापदंड को खत्म करने के लिए आप सब अकादमी के परचम के नीचे कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ेंगे। यही भगवान बुद्ध, गुरू रविदास, महात्मा जोतिबा फुले, स्वामी अछूतानन्द, बाबू जगजीवन राम और बाबा साहब डा. अम्बेडकर का सपना था जिसे हमें पूरा करना है।

अतिथियों का उद्‌बोधन

सम्मेलन में मुख्य अतिथि पूर्व केन्द्रीय मन्त्री एवं सांसद (राज्यसभा) डा. सत्यनारायण जटिया, ने अपने भाषण में कहा कि समाज में सबको सम्मान मिले, सबको समता मिले, प्रत्येक नागरिक अपनी आस्था, विश्वास के साथ अपना कार्य करते हुए निर्भीकता के साथ जिये, यह उसका संवैधानिक मौलिक अधिकार है। भारतीय दलित साहित्य अकादमी पिछले 36 वर्षों से देश में सामाजिक विषमताओं के विरुद्ध अपने वैचारिक क्रान्ति द्वारा लोगों में जो जनचेतना का कार्य कर रही है, उसके लिए अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. सुमनाक्षर जी की जितनी प्रशंसा की जाये कम है। उन्होंने देश में सभी भाषाओं में दलित साहित्य लेखन कराकर विषमता भरे ब्राह्मणवादी मंत्री श्री संघप्रिय गौतम ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि भारतीय दलित साहित्य अकादमी दलितों में दलित साहित्य द्वारा वैचारिक क्रान्ति फैलाकर डा. अम्बेडकर जी के अधूरे कार्यों को पूरा करने का सराहनीय कार्य कर रही है। बाबा साहब चाहते थे कि दलितों को शिक्षित होकर, संगठित होकर, फिर संघर्ष करके फिर से देश की धन, धरती, सत्ता व सम्पदा पर काबिज होना है।

श्री संघप्रिय गौतम ने अपने भाषण में कहा कि मेरी पहचान पूर्व केन्द्रीय मंत्री के कारण नहीं, बल्कि इसलिए है कि बाबा साहब डा. अम्बेडकर के साथ मैंने काम किया है, उनके कथन व निर्देशन के अनुसार अपने जीवन को ढाला है। बाबा साहब के सिद्धांतों के सामने कभी सत्ता मोह को तरजीह नहीं दी। केन्द्रीय मंत्री रहते हुए बाबा साहब के सिद्धांतों पर अडिग रहकर उनके सपनों को साकार करने के लिए अपना पूरा जीवन लगा दिया।

महाराष्ट्र सरकार के पूर्व समाज कल्याण मंत्री नाना बबनराव घोलप ने कहा कि हमारा दलित समाज सैकड़ों जातियों–उपजातियों में बंटा है। हमें अपनी इन जातियों में परस्पर रोटी–बेटी का व्यवहार शुरू करना चाहिए, तभी हमारी एकजुटता बनेगी और हम ताकतवर बनेंगे। इस एकजुटता के लिए हमने पूरे भारत में भ्रमण के लिए 'गुरू रविदास रथ यात्रा' सम्मान के लिए वहां के दलितों में जागरूकता आई है और वे सामाजिक विषमता, छुआछूत और गैर–बराबरी के खिलाफ आवाज उठाने लगे हैं। राजसत्ता में भी हिस्सेदारी के लिए संघर्ष जारी है। इसके लिए अकादमी बधाई की पात्र है।

अकादमी की दक्षिण भारत के राज्यों की समिति के अध्यक्ष प्रो. पी. विष्णुमूर्ति तथा पूर्वोत्तर भारत के राज्यों की समिति के अध्यक्ष श्री बी.एल. रविदास ने अपने उद्‌बोधन में उनके द्वारा किये जा रहे दलितोत्थान कार्यों पर प्रकाश डालते हुए अकादमी के कार्यों की प्रशंसा की। आज बाबा साहब डा. अम्बेडकर का नाम और उनका पैगाम देश के हर कोने में पहुंचा है। यह सब अकादमी का 36 सालों के काम का परिणाम है।

सम्मेलन के दूसरे दिन का कार्यक्रम 'अधिकार दिवस' के रूप में आयोजित किया गया। इस दिन सभी प्रदेशों के प्रतिनिधियों ने अपने–अपने प्रदेशों की दलित सम्बन्धी समस्यायें रखीं और उनके निराकरण के लिए सुझाव दिये। इस दिन के कार्यक्रम में दलित साहित्य विधा पर प्रकाशित पुस्तकों का लोकार्पण किया गया और सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। सम्मेलन के समापन पर जहां विभिन्न प्रदेशों की ओर से अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. सुमनाक्षर का अभिनन्दन किया गया, वहीं अकादमी की ओर से डॉ. सुमनाक्षर त्रिपुरा से श्री सुजीत भौमिक, महाराष्ट्र से प्रो. रतन लाल सोनाग्रा, प्रो. संजय मोरे, पांडिचेरी से प्रो. पी. विष्णुमूर्ति, केरल से श्री टी. बालाकृष्णन, श्री पेरूमल राजप्पन, आंध्र प्रदेश से श्री जी. धनशेखर, उत्तराखंड से प्रो. जयपाल सिंह, दिल्ली से डॉ. राजमल सिंह 'राज', मध्य प्रदेश से श्री पी.सी. बैरवा, श्री हरिनारायन हिंडोलिया, पश्चिम बंगाल से श्री अशोक हलधर, डा. किशनराज गट्टानी, तेलंगाना से डॉ. एम. जितेन्द्र 'मनु', सिक्किम से श्रीमती गीता रुचाल, ओड़िसा से श्री दीपक रंजन बाघ तथा किशोर भोई। सम्मेलन को सफल बनाने में अकादमी के राष्ट्रीय महामंत्री श्री जय सुमनाक्षर, सुश्री सन्धि सुमनाक्षर, श्री धीरज वर्मा, श्री जरनेल सिंह रंगा, श्री कवल मलिक, श्री संजय अग्रवाल, श्री गगन श्रीवास्तव आदि का सराहनीय योगदान रहा। श्री तीरथ कुमार तोगड़िया ने कुशलतापूर्वक मंच का संचालन किया।

सम्मेलन में निम्नलिखित प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किए गये–

1. अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति को सरकारी महकमों में 22½ प्रतिशत आरक्षण तो है, पर उन्हें पदोन्नति में आरक्षण नहीं दिया जाता। यह सम्मेलन सरकार से मांग करता है कि उन्हें पदोन्नति में आरक्षण दिये जाने का प्रावधान संविधान में संशोधन करके करायें।

2. अभी तक न्यायपालिका यानि

धर्मावलम्बियों की गिनती तो बढ़ाई, पर उन्हें वह 'सम्मान' नहीं मिल सका जिसकी की उन्होंने आशा की थी। वहां भी 'अछूतपन' और ऊंच– नीच की भावना ने उनका पीछा नहीं छोड़ा। हिन्दू धर्म से जो दलित अछूत मुस्लिम धर्म में गये उन्हें वहां 'मुसल्ली' कहकर पुकारा गया, जो ईसाई धर्म में गये उन्हें वहां 'डेविड', 'दास', 'मसीह' नाम से अलग पहचान दी गई, जो सिख धर्म में गये, उन्हें वहां 'महजबी' अलग नाम दिया गया, जो आर्य समाज में गये, वहां उन्हें 'महाशय' कहकर पुकारा गया। पर भारतीय दलित साहित्य अकादमी उन सभी मानवीय अधिकार और सम्मान से वंचित दलितों के लिए शरण की स्थली है जहां सभी को बराबर का सम्मान, समता, भाईचारा, प्यार, एक ही शमियाने के नीचे उपलब्ध है।

यह सम्मेलन भारतीय दलित साहित्य अकादमी के समता, स्वतंत्रता, बन्धुता, न्याय के साथ सभी को पूरा 'सम्मान' प्रदान करने की अवधारणा को साकार कर रहा है। अकादमी के इस सम्मेलन में न कोई धर्म का प्रतिबन्ध है, न भाषा, प्रदेश, जाति विशेष का–जो भारतीय संविधान के मौलिक अधिकारों और सबको बराबर का सम्मान व सत्ता–सम्पदा में एक बराबरी का विचार रखता है–उन सबका मैं अकादमी की ओर से अभिनन्दन करता हूं–खासकर उन लोगों का जिनके हाथ का छुआ खाना–पानी लेने से यहां का हिन्दूवादी ब्राह्मण, पांडे, पंडित व अन्य उच्चवर्णाधिकारी परहेज करते हैं, साहित्य को नकार दिया है और हर दलित के मन में समता व सम्मान की लड़ाई को तेज किया है।

बाबा साहब डा. अम्बेडकर जी ने दलितोत्थान के लिए जो तीन मूल मंत्र दिये थे–'शिक्षित बनो, संगठित हो, संघर्ष करो' पर हम अगर पूरी तरह अमल करेंगे तो बहुत जल्दी ही देश की सत्ता, सम्पदा, धन–दौलत पर काबिज हो सकेंगे।

उन्होंने कहा कि बाबा साहब डा. अम्बेडकर ने गुलामी से मुक्ति के लिए न केवल हमारा मार्ग प्रशस्त किया बल्कि अपने अधिकारों को पाने के लिए हमें संघर्ष करना भी सिखाया।

डा. जटिया जी ने कहा कि वैसे तो सरकार दलितों के उत्थान के लिए संवेदनशील है और उनके उन्नति व विकास के लिए अनेक योजनायें संचालित कर रही है पर दलितों को अपने अधिकारों के लिए जागरूक होकर सरकारों पर उनके कार्यान्वयन का दबाब बनाये रखना चाहिए। दलितों को अपने बच्चों की शिक्षा पर जोर देना चाहिए क्योंकि शिक्षा उन्नति व प्रगति की पहली सीढ़ी है जिसके बल पर वे शासन–प्रशासन में अपना उचित स्थान पा सकते हैं। दूसरी ओर सरकारों का भी यह दायित्व व कर्त्तव्य है कि वह सामाजिक समता के लिए दलितों की शिक्षा, रोजगार, आरक्षणपूर्ति, सुरक्षा और न्याय प्रदान कराने प्राथमिकता दे।

बाबा साहब डा. अम्बेडकर जी के अकेले जीवन्त सहयोगी, पूर्व केन्द्रीय का कार्यक्रम बनाया है, जिसमें आपका सहयोग वांछित रहेगा। यू.पी. यू.एम. एस. यूनिवर्सिटी के वायस चांसलर डा. राजकुमार ने अपने जोरदार जोशीले भाषण में बताया कि हम किसी से कम नहीं हैं लेखन में, पराक्रम में, परिश्रम में, बहादुरी में। महर्षि वाल्मीकि, वेदव्यास हमारे पास हैं जिन्होंने रामायण और महाभारत की रचना की। बाबा साहब डा. अम्बेडकर हैं जिन्होंने वर्ण व्यवस्था की जनक मनुस्मृति की होली जलाकर भारतीय संविधान की रचना की। भारत सरकार की साहित्य अकादमी है तो हमारी दलित साहित्य अकादमी है। सवर्णों के पास ब्राह्मणी हिन्दी साहित्य के जनक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र है तो हमारे पास भी दलित साहित्य के उन्नायक डा. सोहनपाल सुमनाक्षर है। इसलिए प्रत्येक दलित को अपना सिर ऊंचा करके गर्व के साथ निडरता के साथ आगे बढ़ना चाहिए।

हरियाणा के पूर्व स्वास्थ्य मंत्री डा. एम.एल. रंगा ने कहा कि भगवान बुद्ध, बाबा साहब डा. अम्बेडकर, संत शिरोमणि गुरु रविदास के समता के सन्देश को अकादमी ने देश और विदेश में प्रचारित कर मानवता की बहुत बड़ी सेवा कर रही है। आज दलित व शोषित लोगों के अन्दर जो जागृति आयी है उसका श्रेय भारतीय दलित साहित्य अकादमी को जाता है।

नेपाल रॉयल कौन्सिल के माननीय सदस्य श्री उत्तम कुमार परिहार ने कहा कि भारतीय दलित साहित्य अकादमी के जन आन्दोलन से सीख लेकर नेपाल में भी सत्ता–सम्पदा–ने अकादमी के सभी प्रदेशाध्यक्षों एवं पदाधिकारियों को 'पलक आफ आनर' (सम्मान पट्टिका) की शील्ड व शाल देकर सम्मानित किया। अन्त में 'जन गण मन' राष्ट्रीय गान के साथ सम्मेलन के समपान की घोषणा की गई।

इस दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन में अकादमी के सभी पदाधिकारियों का पूर्ण सहयोग रहा। सम्मेलन में इनकी उपस्थिति सराहनीय रही। उत्तर प्रदेश से प्रदेशाध्यक्ष डा. लालती देवी, दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो. श्यौराज सिंह 'बेचैन', लखनऊ विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. कालीचरण 'स्नेही', राजस्थान से प्रो. आत्माराम उपाध्याय, श्री संतोष कुमार कालोसिया, हरियाणा से डा. सुरेन्द्र सेलवाल, श्री जरनैल सिंह रंगा, श्री गुरुदयाल मोरथला, पंजाब से श्री तीरथ तोंगडिया, श्री लालचंद रविदासी, इंजी. रूपचन्द, हिमाचल प्रदेश से श्री निरतराम राखा, जम्मू–कश्मीर से डा. विजय कुमार भगत, बिहार से श्री जागाराम शास्त्री, श्री गुरुदयाल शास्त्री, झारखंड से श्री अनिल बांसफोड़, डॉ. राजू राम, छत्तीसगढ़ से श्री जी.एस. बंजारे 'ज्वाला', श्री नन्द किशोर यादव, डॉ. जे.आर. सोनी, कर्नाटक से श्री चेलुवाराजू, श्री सुभाष कानड़े एवं श्री जी. प्रताप, गुजरात से श्री जसवन्त सिंह जड़ेजा, श्री अशोक धेला, तमिलनाडु से डॉ. सी.पी. देसी एड. चन्द्रशेखर, आसाम से श्री ब्रिजलाल रविदास, मणिपुर से श्री आर. के. गुणचन्द्रा तथा वाई. महेन्द्रकुमार सिंह,

नीची अदालतों से सुप्रीम कोर्ट तक जजों की नियुक्ति में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति का आरक्षण कोटा लागू नहीं है। ऐसी स्थिति में दलितों का 'जज' बनने में भारी उपेक्षा बरती जाती है। न्यायपालिका में सवर्ण जजों का वर्चस्व होने के कारण दलितों को पूर्ण न्याय नहीं मिल पाता। अतः यह सम्मेलन में न्यायपालिका के सभी पदों पर दलितों के लिए संविधान प्रदत्त 'आरक्षण कोटा' का प्रावधान लागू किया जाये।

3. स्वच्छ भारत मिशन के अन्तर्गत सरकार अस्पृश्यता निवारण कार्यक्रम चलाये और छुआछूत, भेदभाव, ऊंचनीच, जात–पांत बरतने वालों पर सख्ती से कार्रवाई करे।

4. अनुसूचित जाति/अनु. जनजाति अत्याचार निरोधक कानून लागू करने में जो ढिलाई पुलिस थानों में बरती जाती है उस पर सख्ती से कार्रवाई की जाए ताकि दलितों पर अत्याचार रुक सकें।

5. आज शिक्षा, चिकित्सा और न्याय बहुत महंगा हो गया है। ऐसी हालत में दलित का समाज में समान स्तर पर लाना असम्भव है। अतः दलितों के उत्थान को ध्यान में रखकर सरकार उन्हें यह सब मुफ्त उपलब्ध कराये और इस विषय में तुरन्त कानून बनाये।

6. सरकारी व निजी क्षेत्रों में दिये जाने वाले ठेकों, नौकरियों, पेट्रोल पम्पों, गैस एजेन्सियों में दलितों का उनकी आबादी के अनुसार आरक्षण कोटा निर्धारित किया जाए और ये सब उन्हें सुगमता से उपलब्ध कराये जाएं।

पृष्ठ 1 का शेष...बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर ने गुलामी से मुक्ति के मार्ग के साथ ही अपने अधिकारों को पाने के लिए संघर्ष करना सिखाया–डा. सत्यनारायण जटिया

7. सरकार अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति की नौकरियों में आरक्षित कोटे को पूर्ण रूप से लागू करे। गत वर्षों के जो लाखों आरक्षित पद खाली पड़े हैं, उनको विशेष भर्ती अभियान के तहत भरती करके पूरा करे।

8. सरकार राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग, अनुसूचित जनजाति आयोग व पिछड़ा वर्ग आयोग को न्यायिक अधिकार देकर सशक्त बनाये ताकि दलित, शोषित, उत्पीड़ित लोगों को समय सीमा में न्याय मिल सके।

9. सरकार दलित मीडिया सेंटर स्थापन, समाचार पत्र व टी.वी. चैनल संचालित करने हेतु संचार लाइसेंस की विशेष सुविधा देकर दलित मीडिया कर्मियों व दलित साहित्यकारों को प्रोत्साहित करे।

10. सभी राज्यों में समता के प्रेरक बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर व बाबू जगजीवन राम के नाम पर विश्वविद्यालय खोले जाएं, जहां 80 फीसदी सीटें दलित छात्रों के लिए आरक्षित की जाएं।

11. सभी राज्यों के शिक्षण संस्थानों के पाठ्यक्रमों में सन्त शिरोमणि श्री गुरु रविदास जी, सद्गुरु कबीरदास जी व गुरु घासीदास जी की जीवनी को शामिल किया जाए।

12. देश में लाखों एकड़ खाली व बेकार पड़ी जमीन सरकार भूमिहीन अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष आगे से भारतीय दलित साहित्य के अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष होंगे। इस पद पर उनके कार्यकाल की अवधि दिसम्बर, 2025 तक होगी।

19. भारतीय दलित साहित्य अकादमी की सभी राज्य शाखायें प्रतिवर्ष 6 अक्तूबर को 'दलित साहित्य दिवस' समारोह का आयोजन करेंगी और इस अवसर पर दलित साहित्य के उत्थान के लिए कार्य कर दलित साहित्यकारों, लेखकों, कलाकारों, पत्रकारों को सम्मानित करके प्रोत्साहित करेगी।

20. भारतीय दलित साहित्य अकादमी की सभी राज्य शाखायें अपनी प्रदेश कार्यकारिणी और जिलाध्यक्षों की सूची 1 मई से पहले अकादमी के दिल्ली मुख्यालय को अनिवार्य रूप से भेजेंगे। ये सभी प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किये गये।

इस अवसर पर दलित साहित्यकारों ने आत्म सम्मान के लिए संघर्ष जारी रखने का संकल्प लिया। डॉ. सुमनाक्षर ने पारित प्रस्तावों को उचित कार्रवाई के लिए सम्बन्धित विभागों को भेजने की घोषणा करने और सम्मेलन में पधारे अतिथियों के धन्यवाद ज्ञापन के बाद राष्ट्रीय गीत के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

सम्मेलन के शुभावसर पर विभिन्न अवार्डों से सम्मानित किये जाने वाले महानुभाव हैं :

7. **श्री जी. धनसेखर**
सामाजिक कार्यकर्त्ता, तिरूपति (आन्ध्र प्रदेश)
8. **श्रीमती गीता रूचाल**
सामाजिक कार्यकर्त्ता, गंगटोक (सिक्किम प्रदेश)
9. **श्री मनोहर लाल महे**
सामाजिक कार्यकर्त्ता, जालन्धर (पंजाब)
10. **श्री ई. वीरा राजू**
सामाजिक कार्यकर्त्ता, कोलकत्ता (प. बंगाल)

डा. अम्बेडकर विशिष्ठ सेवा नेशनल अवार्ड-2020

1. **श्री जितेन्द्र पर्डिया**
चड्डी पार्क वाया डलुन्डा जिला–सुबरनपुर (उड़ीसा)
2. **श्रीमती किरन चमुआह**
नबा कथारबाड़ी, डा. धकुआखाना जिला–लखीमपुर (आसाम)
3. **श्री सोमनाथ मन्मथ जंगम**
राहगर, सुचेता नगर (भूषण नगर) केडगांव, जिला–अहमद नगर (महाराष्ट्र)
4. **श्री गुडीमल्ला सन्दीप कुमार**
समाज सेवक
हार्टिकल्चर आफिसेज, कृषि भवन डोज कालोनी, खम्मम (तेलंगाना)

डा. अम्बेडकर एक्सीलेंसी सर्विस नेशनल अवार्ड-2020

1. **श्री के. शिवारमैहा,**
असिस्टेंट सेक्रेट्री (आई/सी) डिपार्टमेंट आफ कर्नाटक इन्डस्ट्रियल एरियाज डवलपमेंट बोर्ड, महर्षि अरविन्द भवन, बंगलौर (कर्नाटक)
2. **श्री नितुल चन्द्र दास, चेयरमैन**
टिटाबार सब–डिवीजनल एस.सी. वेलफेयर बोर्ड, सिलीखाबाड़ी–ग्रांट, टिटाबार (जोरहाट) आसाम
3. **श्री के.एस. असरूफ**
डायरेक्टर आई.आर.आई.सी.टी.सी. अन्ना स्ट्रीट, विरूदामबुट ताल्लुक–कटपडी, जिला–वेल्लौर (तमिलनाडु)
4. **श्री मनोज कुमार अग्रवाल**
जनरल मैनेजर
धोरी एंड गिरीडीह एरिया, धोरी जिला–बोकारो (झारखंड)
5. **श्री धर्मेन्द्र कुमार रविकुल**
साईंटिफिक असिस्टेंट
एन.पी.सी.एल–रावतभाटा (राजस्थान) नेशनल जनरल सेक्रेट्री–एससी/एसटी एम्पलाईज कमेटी (मम्बई), अणुशक्ति रावतभाटा (राज.)
8. **श्रीमती भारती कालिता**
साहित्यकार/कवि
बशिष्ठपुर, डा.–आसाम सचिवालय जिला–कामरूप (आसाम)
9. **श्रीमती मिनी सुरेश**
समा प्रिया, कोट्टायम (केरल)
10. **श्री जे. सेकर**
नेहरू नगर, पुधूकुप्पम, कुड्डालूर (तमिलनाडु)
11. **श्रीमती मिनोडी रानी डेका**, साहित्यकार (रिटा. एच.एम.)
बोकुलानी, डिब्रूगढ़ (आसाम)
12. **श्रीमती रूपरेखा बरूआ,** लेखिका
कहरगांव, डा.–अली, धेकिया जूली जिला–जोरहाट (आसाम)

डा. अम्बेडकर कलाश्री नेशनल अवार्ड-2020

1. **श्रीमती रूपशिखा चौधरी**
सिंगर / वोकलिस्ट
हेगराबाड़ी, सारथीपाड़ा
डा.–आसाम सचिवालय, गुवाहाटी (कामरूप) आसाम
2. **श्री वेद प्रकाश महेश्वरी**
छत्तीसगढ़ पंथी नृत्य संगठन
बहानाकरी, कुरूद कैम्प,
थाना–मंदिर हर्सोद, जिला–रायपुर (छत्तीसगढ़)
3. **श्रीमती सुमित्रा पुथे पुरायिल, कलाकार**

दलित परिवारों में वितरित कराये।

13. भारत सरकार ने 1978 से पंचवर्षीय योजनाओं में 'कम्पोनेन्ट प्लान' के अन्तर्गत दलितों की आबादी के हिसाब से जो धनराशि आवंटित की थी, वह कभी भी उन पर पूरी तरह से खर्च नहीं की गई। अब तक जमा पड़ी वह धनराशि विशेष कार्यक्रम बनाकर दलितों के कल्याण व विकास पर खर्च की जाए।

14. सरकार दलित साहित्य को स्कूल, कॉलेज व विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में लगवाये और सरकारी पुस्तकालयों व प्रतिष्ठानों के लिए दलित साहित्य की सीधी खरीद कर दलित साहित्यकारों को प्रोत्साहित करे।

15. देश की अन्य साहित्यिक व सांस्कृतिक अकादमियों की तरह सरकार भारतीय दलित साहित्य अकादमी को एक मुक्त राशि अनुदान के रूप में दे ताकि अकादमी अपनी विभिन्न योजनाओं को साकार रूप दे सके।

16. सरकार राज्यसभा में सदस्य, राज्यपाल, विदेश दूतावासों के पदों पर दलित साहित्यकारों को मनोनीत करे और प्रतिवर्ष गणतंत्र दिवस व पन्द्रह अगस्त के समारोहों में उन्हें 'मानद उपाधि' से सम्मानित करके अलंकृत करें।

17. भारतीय दलित साहित्य अकादमी का 37वां राष्ट्रीय सम्मेलन 'अन्तर्राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन' नाम से आयोजित किया जाएगा।

18. भारतीय दलित साहित्य

डा. अम्बेडकर इन्टरनेशनल अवार्ड-2020

डा. लक्ष्मी प्रसाद राय
फाऊन्डर प्रेजिडेंट–ग्रेस वेलफेयर सोसाइटी, पोखरा (नेपाल)
प्रेजीडेंट–वायस नेपाल (ह्यूमन राइट्स ओरगनाईजेशन), पोखरा, कार्की, गन्डाकी (नेपाल)

डा. अम्बेडकर नेशनल अवार्ड-2020

<u>दलित साहित्य के लिए</u>

1. **डा. जवाहर पासवान**
वरिष्ठ सहा. प्रोफेसर,
टी.पी. कॉलेज, मधेपुरा (बिहार)
2. **श्रीमती कमला वर्मा**
दलित साहित्यकार
बड नगर, उज्जैन (मध्य प्रदेश)
3. **श्री गुलाब चन्द बारासा**
दलित साहित्यकार
जोधपुर (राजस्थान)
4. **श्री सुल्तान सिंह गौतम**
दलित साहित्यकार
गौतम बुक सेंटर, दिल्ली

<u>दलित मीडिया के लिए</u>

5. **श्री चेलुवाराजू**
प्रधान सम्पादक–रामनगरा वार्त्ता
कन्नड़ दैनिक समाचार पत्र,
रामनगरा (कर्नाटक)

<u>दलितोत्थान – समाज सेवा के लिए</u>

6. **डा. विजय भगत,**
सामाजिक कार्यकर्त्ता, जम्मू
(जम्मू–कश्मीर)
5. **डा. राजकुमार रजक**
मानगंज (प.) वाया जडिया,
जिला–सुपौल (बिहार)
6. **डा. डिडरूल इस्लाम तालुकदार**
तरिनीपुर पार्ट–3,
डा.–सियालटेक,
जिला–कच्छार (आसाम)
7. **श्री मोस्तफा फिजूर रहमान बरभूइया**
पेस्कर रोड, कनकपुर पार्ट–1,
थाना सिल्चर, जिला–कच्छार
(आसाम)
8. **डा. मनु हसन गुरिक्कल पीटी**
समाज सेवक
37, 7वां फेज, मुडीना पलया
रोहित बिल्डिंग, बैंगलोर नार्थ
(कर्नाटक)
9. **श्रीमती ए. अनुसूया, एडवोकेट**
चेनैई हाई कोर्ट
प्लाट नं. 23, पी डब्बलू.डी. नगर
कालीनजूर मेन रोड, वन्जुर,
ताल्लुक–कटयाडी,
जिला–वेल्लौर
(तमिलनाडु)
10. **श्री रेगी जोसेफ चेरूकुन्नर**
डान बास्को सेन्टर, राम नगर,
तारापुर, जिला–कच्छार
(आसाम)
11. **श्री टी.पी. सुनील कुमार**
पोथेरा टाऊस, पथ्यान्नूर,
कन्नूर (केरल)
12. **श्री कुरियन टी.के.**
थोपी पपला, डा.–येरियाकवला,
ईडुपी (केरल)

डा. अम्बेडकर साहित्यश्री नेशनल अवार्ड-2020

1. **श्री भबेन्द्र देव गोस्वामी**
साहित्यकार
अम्बेडकर गिरी नगर,
पुष्प राज भवन, गुवाहाटी,
जिला–कामरूप (आसाम)
2. **श्री महेश चन्द्र सरमा**
(रिटायर्ड प्रोफेसर)
टीहू टाऊन, डा.–टीहू,
जिला–नलबारी (आसाम)
3. **श्री सूना राम सरमरा बुरहरोकोट**
साहित्यकार
मोहीमाबाड़ी, कमलाबाड़ी सतरा
थाना टिटाबार, जिला–जोरहाट
(आसाम)
4. **श्रीमती बोनाली दास सेकिया**
लेखिका
सोन्तीपुर, टिटाबार,
जिला–जोरहाट (आसाम)
5. **श्री महेन्द्र भाई चतुरभाई मकवाना**
दलित लेखक
सागर सोसाइटी, भूलाभाई पार्क,
गीता मंदिर रोड, अहमदाबाद
(गुजरात)
6. **श्री उमेदभाई फकीरभाई मकवाणा**
दलित लेखक
आकाश गांव, तुलसी गरनाला रोड,
आनन्द (गुजरात)
7. **श्री गरगोश्वर दास,** *साहित्यकार*
हटखोला, खलीहागुरी,
टीहू (नलबाड़ी),
आसाम
के.के. नगर, वायनाड (केरल)
4. **श्री सुरेश पी.एस.,** *आर्टिस्ट*
कोथापरम्बू, कोडूगाल्लूर,
थ्रिसूर (केरल)

डा. अम्बेडकर सेवाश्री नेशनल अवार्ड-2020

1. **श्री पविथ्रन ए.,**
डेडिकेटेड सोशिल वर्कर
दिल्ली पुलिस में सेवारत
सिविल लाईन्स, दिल्ली
2. **श्री जीवन चन्द्र बोराह**
राजाबाड़ी, बाकारवाट
जिला–गोलाघाट (आसाम)
3. **श्री जबीर हुसैन लस्कर**
नरसिंगपुर, काबूगंज,
जिला–कच्छार (आसाम)
4. **डा. सुभाष पासवान**
भटसारा, जिला–पूर्णिया
(बिहार)
5. **श्री बोन्टी अहमद**
नरीकलगुरी डेरगांव
जिला–गोलाघाट
(आसाम)
6. **डा. चन्द्र मनि**
कजारी, बेलदौर,
जिला–खगड़िया (बिहार)
7. **श्री सुतारिया मानजीभाई जेठाभाई**
कबोडरा, तह.–तलोद,
जिला–साबरकांठा (गुजरात)
8. **श्रीमती तानिशी इनाम,** *समाजसेविका*
हाटीगांव चरिअली, गुवाहाटी
कामरूप (आसाम)

हिमायती
4 / अप्रैल (प्रथम), 2021 (कुल पृष्ठ 4)
पोस्टल डिस्पेच तिथि :

36वां राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन-2020 विशेषांक

आर. एन. आई. नं. 40611/62
रजि. G-3/DL(N)/090/2018-2020
प्रकाशन तिथि : 27 मार्च, 2021

सेवाश्री के शेष अवार्ड...

9. **श्री दयानन्द कुमार**
चौसा डीस, जिला–मधेपुरा (बिहार)
10. **श्रीमती सजिदा बेगम**
समाजसेविका
मथुरा नगर, दीसपुर, गुवाहाटी कामरूप (आसाम)
11. **श्री जे. अन्बरासन,**
सोशिल वर्कर
पेन्शनर्स कालोनी, कजूर जिला–चित्तूर (आन्ध्र प्रदेश)
12. **श्री अताऊर रहमान लस्कर**
रामनगर, लमार ग्राम, तारापुट खेलमा, जिला–कच्छार (आसाम)
13. **श्रीमती मंगाली गुरूंग राय,**
सोशिल वर्कर
पोखर–15, नेपाल
14. **श्री एस. अन्नादुराई,** सोशिल वर्कर
पुलियूर, कट्टू सगाई, तालुक–कुटीनजीपाड़ी, जिला–कुड्डालूर (तमिलनाडु)
15. **श्री जयवर्धन जगन्नाथ अम्बालजी,** सोशिल वर्कर, मुम्बई डिवीजन रेलवे यूजर्स कन्सलटेटिव कमेटी, (बंगलौर), रामनगर, गुलबर्गा (कर्नाटक)
16. **श्री राजू सरकनिया उर्फ राजा बाल्मीकि**
4. **श्रीमती अंजलि कुमारी**
भागीपुर वाया आलमनगर जिला–मधेपुरा (बिहार)
5. **डा. अरविन्द कुमार**
भटसारा वाया वी. कोठी जिला–पूर्णिमा (बिहार)
6. **श्रीमती वन्दना कुमारी**
लौकाटा, जिला–सुपौल (बिहार)
7. **श्री बन्दडी नागेश्वर राव**
तहसीलदार, हडनपार्थी मंडल थिरमूलापुरम, चिन्ताकनी, जिला–खम्मम (तेलंगाना)
8. **आयुष्मन आशुतोष पी. मेश्राम**
साईंटिफिक आफिसर
ए.पी.सी.एल, तारापुर, एरोनिक पावर स्टेशन, नेशनल वाईस चेयरमैन एससी/एसटी एम्पलाईज कमेटी, मुम्बई थाने (महाराष्ट्र)

बाबू जगजीवनराम समता अवार्ड-2020

1. **श्री गुरुदयाल सिंह**
सीनियर सोशिल वर्कर
कुरूक्षेत्र ट्रेवल्स, जी.टी. रोड, पीपली, कुरूक्षेत्र (हरियाणा)
2. **श्री मौलप्पा परसप्पा कडेमनी**
साइन्टीफिक आफिसर
नेशनल जवाइंट सेक्रेट्री, एम.पी. सी.एल. एससी/एसटी एम्पलाईज, जे.सी. कमेटी, मुम्बई, केगा (उत्तर कन्नड़) कर्नाटक

महर्षि वाल्मीकि नेशनल अवार्ड-2020

श्री संजीव कुमार, आई.एफ.एस.
रीजनल चीफ कन्जेरवटोर आफ फारेस्ट, हजारीबाग (झारखंड)

लोहपुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल नेशनल अवार्ड-2020

1. **श्री चावड़ा नरेशभाई कनुभाई,**
सोशिल वर्कर
पंकज सोसाइटी, चकलिया रोड, दाहोद (गुजरात)
2. **डा. आर.सी.पी. सिसोदिया**
एक्स–सी.एम.एच.ओ. आर.डी. गार्डी मेडिकल कालेज, उज्जैन (म.प्र.)
3. **श्री विनायक शामू महाजन,**
सोशिल वर्कर
अजनाद, तह.–रावेर, जिला–जलगांव (महाराष्ट्र)

श्री वीर माया देव सेवाश्री नेशनल अवार्ड-2020

श्रीमती रमीलाबेन डी. मकवाना
एजूकेशनिस्ट/सोशिल वर्कर
लडुला प्राइमरी स्कूल, भाभर, जिला–बनासकौठा (गुजरात)

वीरांगना श्रीमती त्रिलोचन सुमनाक्षर मेमोरियल नेशनल अवार्ड-2020

श्रीमती हर्ष मदान
लेखिका/कवित्री/सोशिल वर्कर दिल्ली

अकादमी का 37वां राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन

11-12 दिसम्बर 2021 को पंचशील आश्रम, झड़ौदा, दिल्ली में

भारतीय दलित साहित्य अकादमी का 37वां राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन पंचशील आश्रम, झड़ौदा (बुराड़ी) दिल्ली में आयोजित किया जायेगा। अकादमी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी ने यह निर्णय लेते हुए इस आगामी सम्मेलन को भव्य व ऐतिहासिक बनाने के लिए सभी प्रदेशाध्यक्षों से अनुरोध किया है कि वे दलितोत्थान के इस महान कार्य में अभी से सक्रियता, लगन व निष्ठा के साथ अपना कार्य शुरू कर दें। अपने प्रदेश व जिला स्तर पर सभा, सम्मेलन, विचारगोष्ठी करके दलितोत्थान कार्यों, दलित साहित्य सृजन, प्रकाशन व प्रसारण को कारोना काल में हुई क्षति को पूरा किया जा सकेगा। सुझाव, प्रस्ताव, सहयोग अकादमी को सीधे भेज सकते हैं।

डा. सोहनपाल सुमनाक्षर
राष्ट्रीय अध्यक्ष
भारतीय दलित साहित्य अकादमी
बी-3/9, दूसरी मंजिल, मॉडल टाउन–I, दिल्ली-110009,
मो. 9810278936

सम्पादकीय का शेष...36वां राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन : अकादमी की सक्रियता, लगन और निष्ठा का प्रतिफल

है। भारतीय दलित साहित्य अकादमी ने ही 5 हजार साल पुरानी सिंधु घाटी की सभ्यता की खोज कर वहां स्थित भव्य, आलीशान सर्वोत्तम भवन कला के नमूने मोहन जोदड़ो, हड़प्पा, लोथल, धोलवीरा, पीली बंगा, काली बंगा शहरों की संस्कृति को उजागर किया। दलित अकादमी के कारवां को आगे बढ़ाया। श्री टी.आर. विश्वकर्मा (नेपाल) और चौ. दुलीचन्द, स्वतंत्रता सेनानी, दोनों ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने अकादमी के सम्मेलन में सहभागिता करते हुए हमसे विदा ली। इनके अलावा भी पर्दे के पीछे अन्य और लोग भी कार्यरत रहे है

प्रेजीडेंट–बाबा साहब डा. अम्बेडकर समाज भूषण– दलित मित्र संस्था, मुम्बई (महाराष्ट्र)

17. **डॉ. राजकुमार, वायस चांसलर**
यू.पी. यू.एम.एस., सैफई, इटावा (उ.प्र.)
18. **श्री शिवराम,** *सोशिल वर्कर*
सरजापुर रोड, कोडथी, बेंगलौर (कर्नाटक)
19. **श्रीमती शालन भीम राव मुरगड**
गुरु कला कुटीर, सहकार नगर, बेंगलूरू (कर्नाटक)

महात्मा जोतीबा फुले नेशनल अवार्ड-2020

1. **श्रीमती अनीता सिन्हा,** *समाजसेविका*
अवधेशपुरी कालोनी, कालूद्वारवा मोतीहारी, पूर्वी चम्पारण (बिहार)
2. **श्री रोहित रामाभाई मनीभाई** *सोशिल वर्कर*
सेक्रेट्री–वडोदरा तालुक राष्ट्रीय शिक्षक संघ,
रोहित वास, गना, जिला–आनन्द (गुजरात)
3. **श्री सोलंकी जयेशकुमार करसनभाई,** सेक्रेट्री
64, परगना एजूकेशन ट्रस्ट
मोगर, जिला–आनन्द
(गुजरात)

सद्गुरू कबीर नेशनल अवार्ड-2020

1. **श्री रतिराम वर्मा**
सोशिल वर्कर
आजादपुरा, ललितपुर (उ.प्र.)
2. **डा. राम एकवाल राम**
असिस्टेंट टीचर
स्कीस्टा बुजुर्ग, थाना–कांटी
मुजफ्फरपुर (बिहार)

भगवान बुद्धा नेशनल अवार्ड-2020

1. **श्री अदला बलवर्धन गौड**
सोशिल एक्टीविस्ट
गोल्लापल्ली, महबूब नगर, (तेलंगाना)
2. **इन्जी. मोहनलाल सिंगारिया,** *सोशिल वर्कर*
आवास विकास कालोनी,
शिवाजी नगर, झांसी (उ.प्र.)
3. **श्री जे.एस. अनन्था कृष्णनन**
कोटामाला,
पुथूक्कूल अंगारा
त्रिवेन्ड्रम (केरल)
4. **श्री शामभाजी राव गोरख भोरे, बौद्धाचार्य**
नेशनल वाईस चेयरमैन–एससी/एसटी एम्पलाईज कमेटी,
अणु शक्ति नगर, मुम्बई

श्री गुरु रविदास नेशनल अवार्ड-2020

श्री बबनराव घोलप
पूर्व समाज कल्याण मंत्री, महाराष्ट्र
नेशनल प्रेजीडेंट–राष्ट्रीय चर्मकार महासंघ नासिक (महाराष्ट्र)

पुण्य श्लोका राजमाता अहिल्या बाई होलकर नेशनल अवार्ड-2020

श्री संजय तुकाराम धनगर, *सोशिल वर्कर*
नरवेल, तह.–मुक्ताई नगर,
जिला–जलगांव (महाराष्ट्र)

स्व. राकेश सोनी मेमोरियल गुरू घासीदास नेशनल अवार्ड-2020

डा. जितेन्द्र मनु
ओरगाईजिंग सेक्रेट्री–
साउथ इंडिया स्टेट्स, बी.डी.एस.ए.
स्टेट प्रेजीडेंट, बी.डी.एस.ए.
(तेलंगाना)

बाबू परमानन्द स्मृति नेशनल अवार्ड-2020

श्री भारत भूषण बोधि,
पूर्व एम.एल.ए.
चेयरमैन–डिस्ट्रिक्ट इम्ल्यमेंट कौसिल, जम्मू

साहित्य, दलित कला, दलित संस्कृति, दलित वीर–वीरांगना, दलित संत, महात्मा, महापुरुष का जो मान–सम्मान आज आर्य संस्कृति के लोग कर रहे हैं। वे भी यह मानने लगे हैं कि दलित (द्रविड़) ही इस देश के मूल निवासी थे जिन्हें धोखे और षड्यंत्रपूर्वक सिन्धु घाटी से दक्षिण भारत की ओर धकेल दिया गया। आर्यों के इस छल, कपट को दलित साहित्य ने ही उजागर कर द्रविड़ व उनकी भाषा तमिल, तेलगू, मलयालम व कन्नड़ को यथोचित सम्मान दिया।

भारतीय दलित साहित्य अकादमी को देश–विदेश में आगे बढ़ाने में दलित समाज के महापुरुषों का सदेव योगदान रहा है। ऐसे महापुरुषों में भू.पू. राज्यपाल डा. माताप्रसाद, डा. सूरजभान, बाबू परमानन्द, डा.ए. पद्मानाभन, चौ. चांदराम का सदैव आशीर्वाद और मार्गदर्शन मिलता रहा। इसके अलावा अन्य सैकड़ों ऐसे दलित साहित्यकार दलित कलाकार, दलित समाजसेवी हैं जिन्होंने दलित साहित्य आन्दोलन को आगे बढ़ाने में अपना धन–मन–धन से योगदान दिया। आचार्य गुरुप्रसाद श्री किशोर भाई, श्री प्रेमचन्द आर्य, डा. अवन्तिका मरमट डा. पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी, डा. नवल वियोगी, डा. महावीर दास, श्री ए.एल. मजूमदार, श्री बी.बी. सिंह लोहार, श्री ताराचन्द पिपल आदि ऐसे महानुभाव हैं जिन्होंने अपनी अन्तिम सांस तक जिनके अथक परिश्रम के कारण अकादमी द्वारा प्रतिपादित दलित साहित्य वैश्विक साहित्य बना।

गत वर्ष से 6 अक्तूबर को अकादमी की सभी प्रदेश व जिला शाखायें 'दलित साहित्य दिवस' का आयोजन कर रही हैं। यह दलित साहित्य में एक नई परम्परा शुरू हुई। मैं भारतीय दलित साहित्य अकादमी की ओर से उन सबका स्मरण करते हुए उनके योगदान, आशीर्वाद, मार्गदर्शन के लिए आभार व्यक्त करता हूं। साथियों, अभी हमें और आगे जाना है। हमें सामाजिक विषमताओं को खत्म कर के समता के मानवीय अधिकारों को हासिल करना है। हम रहें, न रहें, अकादमी का समता का कारवां आपके सहयोग से निरन्तर आगे बढ़ता रहेगा। ऐसी आशा करता हूं कि इस साहित्यिक महायज्ञ में आपकी आहुति निरन्तर मिलती रहेगी।

साथियो, हम तो निकले थे
यूं ही निशाने मंजिल,
लोग जुड़ते गये,
कारवां बनता गया।

अकादमी का यह कारवां अकादमी की सक्रियता, लगन व निष्ठा का प्रतिफल है और इस श्रेय के आप भी बराबर के भागीदार हैं। निष्ठा, लगन और सक्रियता से आप यूं ही आगे बढ़ते रहें, इसी आशा के साथ–जय भीम, जय भारत, जय अकादमी।

– डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर
राष्ट्रीय अध्यक्ष, भा.द.स.अकादमी

स्वामी, सम्पादक/ प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर द्वारा वन्दना आफसेट प्रिन्टर्स, A-9 सराय पीपलथला एक्सटेंशन, दिल्ली-33 में मुद्रित तथा रजि. कार्यालय : 233 टैगोर पार्क, माडल टाउन, दिल्ली-9 से प्रकाशित। ❑ सह सम्पादक - जय सुमनाक्षर, फोन : 27421449, मो. 9810278936 **Email-sumanakshar@ymail.com**

नोट : हिमायती में प्रकाशित रचनाओं के लिए सम्पादक की सहमति जरूरी नहीं। हिमायती से सम्बन्धित किसी भी कानूनी कार्रवाई का क्षेत्र दिल्ली न्यायालय तक ही सीमित है।

सम्पादकीय कार्यालय : बी 3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन-1, दिल्ली-110009